उद्योग संचेतना - [Udyog Sanchetana]

वर्ष 11 – अंक 07
माघ - 2081वि.

अप्रैल 2014 से प्रकाशित **निःशुल्क मासिक ई-पत्रिका** उद्योग, टेक्नोलॉजी तथा पदार्थ विज्ञान में हो रहे बदलाव का परिचय कराती है। सामान्य ज्ञान की आवश्यकता इंजीनियरिंग छात्रों, लघु उद्योग व पेशेवरों को ही नहीं, स्कूली बच्चों व अध्यापकों के लिए भी जरुरी है।

प्रयागराज महाकुम्भ - 2025 सिर्फ एक विशाल मेला नहीं, इसका सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व भी है।

Udyog Sanchetana means awareness of Industry, Technology, and Startup Opportunities.

It's a **FREE** publication, but you may like to Support us through the QR code -

For feedback write to
ispatbharti@gmail.com

इस अंक में -

- **पद्मश्री विनायक**
- **नौकरी कल्चर**
- **स्वावलम्बन परिवार**

सम्पादक की कलम से – स्वावलम्बन परिवार !

शिक्षा का लक्ष्य है, जीवन में कुछ बनने का प्रयास, जिससे खुशी, और आत्मसंतोष के साथ कमाई भी हो।

काम अर्थात कामनाओं की पूर्ति के लिए धन (अर्थ) की आवश्यकता है तथा भारतीय संस्कृति में चार पुरुषार्थ हैं - **धर्म**, **अर्थ**, **काम**, **मोक्ष**।

अर्थ और **काम** को धर्म और मोक्ष के बीच रखा है, और **धर्म** का मतलब यहाँ कोई पाठ-पूजा या किसी पंथ को मानना नहीं, **कर्तव्य है**।

धर्म (कर्तव्य) का निर्वाह अपने और परिवार के लिए तथा समाज और पर्यावरण के लिए है। मोक्ष का सम्बन्ध मरने के बाद नहीं...

...सुख - दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान में विचलित न होना, अर्थात समत्व ही **मोक्ष** (भगवद्गीता के शब्दों में **योग** है "समत्वं योग उच्यते"।

तो चलिये - इस अंक में बात करते हैं एक B Tech और MBA डिग्री वाले पद्मश्री विनायक की, जो समाज के लिए जीता है।

हममें अधिकतर लोग नौकरी चाहते हैं, लेकिन कई बार कुछ लोग परेशान रहते क्योंकि बात वातावरण की है।

इसलिए कैरियर की दिशा चुनने के लिए **स्वावलम्बन** की आवश्यकता है, जिससे कोई बेरोजगार न रहे। इसकी भी चर्चा जरुरी है।

डॉ. तृप्ति ग्रोवर, PhD (AIIMS)
प्रबन्ध सम्पादक

With Best Compliments from-
Liberty Metal & Machines Pvt Ltd
Importers of pre-owned Conventional & CNC Machine Tools. Machines imported are in excellent working condition and can be tested at warehouse in Delhi.
www.libertyusedmachines.com
www.usedmachinesdelhi.com
LIBERTY
Email : info@libertymachines.in
rohit.jain@libertymachines.in
Call us at -09818275782, 09810073282
YouTube Channel - **Libertymachines**

पद्मश्री विनायक

पच्चीस साल का युवक, IIT-Kharagpur से B Tech और IIM-Kolkata से MBA; कल्पना कीजिए किसी बहुराष्ट्रीय कम्पनी में उसको कैसी नौकरी मिल सकती थी, लेकिन वह समाज सेवी बन गया। इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर भारत सरकार ने जब पद्मश्री के लिए विनायक के नाम की घोषणा की, तो देश भर के अनगिनत लोग प्रसन्न हो उठे।

भोपाल में एक IAS अधिकारी के घर जन्मे विनायक की पढ़ाई भोपाल के कैंपियन स्कूल से शुरू हुई। साल 2000 में IIT खड़गपुर से बीटेक के बाद एक प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी मिली, मगर कॉरपोरेट दुनिया में सन्तुष्टि नहीं हुई और साल भर बाद फिर पढ़ाई करने IIM कोलकाता आ गये।

प्रबंधन की पढ़ाई के आखिरी दिनों में विनायक का मन बदलने लगा। स्टेशन और शहर की बदनाम गलियों में लावारिस बच्चों की हालत देखकर उनका मन व्यथित हो उठा, और वह सामाजिक सरोकार के विषयों पर अखबारों में लिखने लगे, कई गैर-सरकारी संस्थाओं (NGO) में वॉलंटीयर सेवा भी की।

परन्तु MBA के बाद कॉरपोरेट दुनिया में लौटने का मन नहीं था। विनायक कुछ करना चाहते थे, जिससे यतीम बच्चों की जिंदगी बदल सकें। साल 2003 में MBA डिग्री पाने के बाद रामकृष्ण मिशन में दीक्षा ली और वहां संन्यासियों के साथ समय बिताने लगे। फिर समाज सेवा के इरादे से उन्होंने एक आश्रम की शुरूआत की, जिसका नाम रखा '**परिवार**'।

वह एक गैर-लाभकारी संगठन चलाना चाहता था। पिता नाखुश थे, क्योंकि संगठन चलाने के लिए जो अनुभव चाहिए, वह विनायक के पास कहां था? कोई भी मदद करने को तैयार नहीं था। धन जुटाने की कोशिशें जब बेकार हुईं, तो उन्होंने MBA की तैयारी कर रहे छात्रों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दिया। इससे जो पैसे मिलते, उससे शहर के ठाकुरपुकुर के करीब किराये पर एक इमारत ली और तीन बच्चों के साथ अपना **परिवार आश्रम** शुरू कर दिया।

विनायक अपनी कमाई इस मिशन में लगा रहे थे, मगर कई बार ऐसी स्थिति आती जब अगली सुबह या शाम के भोजन की व्यवस्था कैसे होगी, पता नहीं होता था। मां को बेटे के संघर्ष के बारे में पता चला, तो 'परिवार आश्रम' के लिए पहला डोनेशन भोपाल से आया। **मां तो मां होती है**!

विनायक का हौसला बुलंद हुआ। अगले छह महीने में 55 बच्चे परिवार का सदस्य बन चुके थे। विनायक ने IIM के पुराने साथियों से अपील की, ई-मेल भेजी, साथियों ने दिल खोलकर साथ दिया, 2004 के अंत तक विनायक ने आश्रम के लिए ठाकुरपुकुर में दो एकड़ जमीन खरीदी और उसमें अपने सपनों की मंजिल खड़ी कर दी। दो एकड़ परिसर धीरे-धीरे बीस एकड़ तक फैल गया और विनायक का **'परिवार आश्रम'** पूर्वी भारत का सबसे बड़ा निशुल्क आवासीय संस्थान बन गया।

शुरुआत में विनायक ने चार से दस साल तक के अनाथ, परित्यक्त और गरीब आदिवासी बच्चों की सहायता पर अपना ध्यान केंद्रित किया, क्योंकि वह जानते थे कि शोषण, उत्पीड़न और मानव तस्करी के लिहाज से ये बच्चे ही सबसे अधिक संवेदनशील स्थिति में होते हैं।

एक नौजवान की इस करुण कवायद ने अनेक युवाओं को आकर्षित किया। मदद के हाथ बढ़ते गए और फिर वह मुकाम भी आया, जब विनायक ने बंगाल परिसर में लड़कों के लिए **'परिवार विवेकानंद आश्रम'** और लड़कियों के लिए **'परिवार शारदा तीर्थ'** नाम से दो आवासीय स्कूलों की शुरुआत की। इन दोनों संस्थानों में आज 2,100 से अधिक बेसहारा, वंचित बच्चे निशुल्क अपना जीवन बदल रहे हैं। यहां के कई बच्चे विश्वविद्यालय की डिग्रियां भी हासिल कर चुके हैं।

साल 2016 में विनायक ने मध्य प्रदेश के संदलपुर में आश्रम के लिए 17 एकड़ जमीन खरीदी। 2017 में उन्होंने मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के 19 जिलों की आदिवासी बस्तियों में 800 रामकृष्ण विवेकानंद सेवा कुटीर की स्थापना की है, जिनमें आज लगभग 55,000 गरीब बच्चे दो पारियों में भोजन के साथ शिक्षा व जीवन कौशल हासिल कर रहे हैं।

बंगाल की तरह परिवार आश्रम ने संदलपुर और सिहोर में दो आवासीय स्कूल बनाए, जहां 1,000 से अधिक बच्चे पढ़ रहे हैं। विनायक ने बहुत पहले फैसला कर लिया था कि वह शादी नहीं करेंगे, नियति ने उन्हें हजारों अनाथ बच्चों का पिता बनने के लिए जो चुना था।

पद्मश्री भी ऐसे नामों के साथ जुड़कर ही सार्थक होती है!

प्रस्तुति चंद्रकांत सिंह, सौजन्य - दैनिक हिन्दुस्तान, रविवार - 8 फरवरी 2025

****

जीवन की उपलब्धि केवल अकूत धन कमाने, सम्पत्ति बनाने, ऊँचे पद और सम्मान पाने में नहीं। यह सब भी हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए, लेकिन सोचिये उनके बारे में जो करोड़ों की कमाई घर की अलमारियों, पलंग के बॉक्स या बेसमेंट में छिपा कर रखते हैं।

पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम। दोउ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।

नौकरी कल्चर

जैसे घर परिवार की एक संस्कृति या कल्चर होती है, ऐसे ही औद्योगिक संस्थानों की भी कल्चर होती है। किसी संस्थान में बड़ा अच्छा माहौल होता है, लोग एक दूसरे का सम्मान करते हैं, सीखने और आगे बढ़ने में सहयोग करते हैं, तो कहीं एक दूसरे की टांग खींचते हैं। बड़े अधिकारी या बॉस की चमचागिरी करनी पड़ती है या किसी अच्छे काम की शाबाशी नहीं मिलती।

ऐसे में कभी-कभी तंग आकर लोगों को नौकरी छोड़नी पड़ती है। अब कहीं तो लोग चुपचाप त्यागपत्र दे देते हैं, तो कहीं कुछ नाराजगी दिखाते हुए लोग अचानक त्यागपत्र दे देते हैं - इसे **रिवेंज क्विटिंग** अर्थात दुखी होकर, असंतोष व्यक्त करते हुए या भावुकता में छोड़ना कहते हैं। इंडिया टुडे में प्रकाशित एक लेख ने बताया कि इस दूसरे प्रकार के त्यागपत्र की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

इस प्रकार असंतोष में नौकरी छोड़ना आसान निर्णय नहीं, क्योंकि आज की परिस्थिति में दूसरी नौकरी मिलना आसान नहीं। अब आप किसी संगठन या संस्थान की वर्क कल्चर तो बदल नहीं सकते, या तो स्वयं को उस वातावरण में ढालने की कोशिश की जाय अथवा स्वावलम्बी बनने का फार्मूला आपके हाथ में होना चाहिए।

स्वावलम्बन

स्वावलम्बन या आत्मनिर्भरता की शिक्षा स्कूल से मिलनी चाहिए। शिक्षा के बाद हम इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, चार्टर्ड अकाउंटेंट (CA) या प्रशासनिक सेवाओं में जाने का सपना लेते हैं। सपना लीजिये, तैयारी कीजिये, लेकिन कभी-कभी सपना पूरा होने में देरी होती है तो उस समय क्या हम निठल्ले बैठे रहें या बेरोजगार कहलायें?

आज बी एड करने के बाद भी सरकारी नौकरी के लिए प्रतियोगी परीक्षा के लिए इन्तजार करना पड़ता है या परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद भी छः आठ महीने पोस्टिंग मिलने में लग जाते हैं। फिर पोस्टिंग किसी गाँव में मिल जाए तो विशेषकर महिलाओं को आने-जाने में असुविधा होती है।

वैसे भी ट्यूशन या कोचिंग एक अच्छा व्यवसाय है और कोचिंग या मार्गदर्शन की तो हर विषय या हर समस्या के लिए अपार संभावनाएं हैं। तो पहला काम यह हो सकता है, हम अपना शौक चुनें, जो पढ़ाई के विषयों से जुड़ा भी हो सकता है और पढ़ाई से हटकर भी - जैसे बागवानी, संगीत, योग, कोई खेल, वगैरह। और दूसरा कोई धन कमाने का तरीका सीखें - जिसकी चर्चा हम स्वावलम्बन के अंतर्गत करेंगे।

सम्पादन सहयोग - अनुभूति सचदेवा, ईशान चोपड़ा

DISCLAIMER: Contents in this eNewsletter are not for commercial or business use